1. मातृभाषा (Mother Tongue)

मातृभाषा खंड में तीन भाषाओं को सम्मिलित किया गया है जो निम्नलिखित हैं—हिन्दी, उर्दू एवं बांगला। इस खंड से छात्र किसी एक भाषा का चयन करेंगे। इसे हिन्दी (मातृभाषा)/उर्दू (मातृभाषा)/बांगला (मातृभाषा) नाम से संबोधित किया गया है। यह पत्र 100 अंकों का होगा एवं उत्तीर्णांक 30 अंक होगा। इस खंड से एक भाषा लेना अनिवार्य होगा।

1.1 हिन्दी (मातृभाषा)

1. प्रस्तावना :

आठवीं कक्षा तक छात्र-छात्राओं में विचारगत एवं भाषागत प्रौढ़ता प्राप्त करने की ललक जग गई होती है। अतः माध्यमिक स्तर पर वे अपने प्रौढ़ विचारों की प्रभावी अभिव्यक्ति के लिए व्यग्र हो उठते हैं। वे अपने पढ़ने, लिखने अर्थात् सम्पूर्ण अभिव्यक्ति-कौशल को तो आकर्षक और प्रभावशाली बनाना ही चाहते हैं, दूसरों की भी अभिव्यक्ति-कौशलों के गुण-दोषों की आलोचना करने लग जाते हैं। यह वह स्तर होता है, जहाँ पर छात्र-छात्राओं में साहित्य के सौन्दर्यबोध का बीज अंकुरित होने लगता है। वे अपने परिवेश को लाँघते हुए उत्तरोत्तर अपने वृहत्तर समाज से जुड़ते जाते हैं और अपने अर्जित भावों और विचारों की रंग-बिरंगी पतंगों को अपने विशिष्ट भाषा-कौशलों की डोरों से अभिव्यक्ति के उन्मुक्त नील-गगन में उड़ाने लग जाते हैं। इसलिए इस स्तर पर मातृभाषा 1
हिन्दी की पढ़ाई में विशेष सावधानी की आवश्यकता है। ध्यान यह रखा गया है कि इस स्तर पर छात्र-छात्राओं को जो अध्ययन-सामग्री (पाठ्यक्रम) अभिस्तावित है, वह उनमें ऐसी व्यावहारिक योग्यता का विकास कर सके, जिसके द्वारा वे न केवल साहित्यिक बल्कि अपने और विश्व के सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक संदर्भों पर भी आत्मविश्वासयुक्त विचार-विमर्श कर सके।

2. पाठ्यक्रम के विविध आयाम

(क) ज्ञान विस्तार :

स्वभावतः विद्यालयीय शिक्षण में हिन्दी भाषा-साहित्य के शिक्षण के लिए विशेष सजगता, सावधानी और गंभीरता की आवश्यकता है। विद्यालयीय शिक्षा पूरी होने तक छात्र का भाषा और साहित्य विषयक बोध इतना विकसित हो जाना चाहिए कि उसमें गद्य-पद्य की किसी रचना के संबंध में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास उत्पन्न हो सके तथा वह निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त भी किसी रचना को पढ़कर उसके बारे में अपनी भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया दे सके, वह विविध विषय-क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा तथा भिन्न सन्दर्भों और जरूरतों के अनुसार अलग-अलग शैली रूपों से परिचित हो सके, वह हिन्दी भाषा की विशेषता, सूक्ष्मता और सौन्दर्य को पहचान और परख सके। भाषा के माध्यम से छात्र अपने यथार्थ जगत् को समझ सके और कल्पना के संसार की रचना कर सके। भाषा के द्वारा उसके ज्ञान क्षेत्र का इतना विस्तार हो जाए कि वह अखबारों में आनेवाले व्यक्ति, परिवेश, समाज, संस्कृति आदि की जानकारी रख सके और इस जानकारी में कहाँ-क्या बढ़ोतरी वांछित है, इसकी पहचान कर सके।

(ख) कौशल विस्तार :

स्कूली शिक्षा के दौरान हिन्दी भाषा में छात्र अपनी ऐसी दक्षता और पकड़ बना सके कि वह पाठक, श्रोता, वक्ता, लेखक और विश्लेषक के रूप में आत्मविश्वास अनुभव कर सके। आवश्यकता पड़ने पर वह अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकों आदि से सामग्री एकत्र कर उसका सटीक उपयोग कर सके। छात्र अपनी अर्जित भाषिक दक्षता और कौशल के बल पर वाद-विवाद, चर्चाओं, भाषणों आदि में समर्थ प्रतिभागिता का प्रमाण दे सके तथा व्यवस्थित तथा असरदार तरीके से अपने विचारों, भावों और संवेदनों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त कर सके। भाषा उसमें जरूरी मानसिक बौद्धिक गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को सम्पन्न बनाए।

(ग) रुचि और रुझान :

भाषा का शिक्षण ऐसा होना चाहिए कि छात्र में बिहार की बोलियों और अन्य भाषाओं की विविधता के प्रति स्वीकृति और सद्भाव-सम्मान का भाव बने तथा हिन्दी के सहारे अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं और उनके साहित्य के प्रति उत्सुकता और जिज्ञासा का भाव भी विकसित हो। हिन्दी भाषा और साहित्य के शिक्षण द्वारा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को जान-समझकर उनकी अच्छाइयों को आत्मसात कर सकने की मनोवृत्ति जन्म ले। जातिवाद, वर्गवाद, ऊँच-नीच के संकीर्ण मनोभाव, धर्म-सम्प्रदाय को लेकर मन में गाँठ बना लेनेवाली कट्टरता, लिंग-भेद आदि विचलित हों और मन में सहिष्णुता, सद्भाव, उदारता और सहज अपनापन के भाव जन्में और बद्धमूल हों, तभी हिन्दी भाषा और साहित्य का शिक्षण सार्थकता प्राप्त कर सकता है।

(घ) पाठ्यपुस्तक :

विद्यालयीय छात्रों में उपर्युक्त योग्यता, दक्षता और सामर्थ्य विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि
2 पाठ्यपुस्तकों, विशेषतः हिन्दी भाषा-साहित्य की पाठ्यपुस्तकों, में ऊपर चर्चित विशेषताओं का सन्निवेश हो। यह सच है कि पाठ्यपुस्तकें ही भाषा-साहित्य के शिक्षण का एकमात्र स्रोत नहीं होतीं, किन्तु वे प्राथमिक रूप से अधिकृत रूप में एक मार्ग, एक दिशा देती है और संबद्ध विषय में छात्रों के मानसिक-बौद्धिक अभिनिवेश में तत्काल सहायक होती है। इसलिए, उनमें संकलित रचनाएँ और अभ्यास-प्रश्न योग्य एवं उत्तरदायी व्यक्तियों द्वारा अत्यंत सावधानी और गंभीरता से तैयार किए जाएँ जो छात्रों में वांछित ज्ञान, समझ, दृष्टिकोण, अभिरुचि, संस्कार और कौशल को बनाने-सँवारने और बढ़ाने में प्रधानतापूर्वक सहायक हों। पाठ्यपुस्तकें साधन और माध्यम के रूप में छात्रों में कक्षा-दर-कक्षा भाषा-सामर्थ्य को पैना, दृढ़तर और बहुमुखी बनाती चलें तथा उनमें साहित्य की प्रकृति, स्वरूप, प्रयोजन और उद्देश्य की समाज-संबद्ध, जिम्मेदार व संवादी चेतना अधिकाधिक गहरी और विकसित करती चलें।

इन पुस्तकों में कौतूहलपरक, जिज्ञासावर्धक तथा जीवन-जगत् के अनेकानेक सरोकारों वाली विविधतापूर्ण रचनाएँ शामिल हों और उनसे जुड़े हुए ऐसे अभ्यास-प्रश्न हों कि छात्र उन्हें तनावमुक्त सहजता से आत्मसात करते हुए उनपर भावात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सकें। रचनाओं के स्वरूप और चयन, उनकी क्रमव्यवस्था और विषय-वस्तु में यह ध्यान रखा जाय कि छात्र रचना पढ़ते समय अन्य विषयों की अवधारणाओं से उन्हें जोड़ पाएँ और दोनों के अंतःसम्बंध को देख सकें।

पाठ्यपुस्तकों में विषयवस्तु के फलक इतने विस्तृत होने चाहिएँ कि उनमें आधुनिक समाज के विविध सरोकारों की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हो, जैसे—पर्यावरण, परिवेश, संवैधानिक दायित्व, लोकसंस्कृति, व्यापार-वाणिज्य और विविध व्यवसाय, बाजार, सिनेमा, खेल-जगत्, नाटक, नृत्य, संगीत, उद्योग-धंधे, कृषि, मीडिया, विज्ञान जगत्, पर्वत-समुद्र-अंतरिक्ष, राजनीति, धर्म आदि; इन विषयवस्तुओं के द्वारा भाषा के विविध प्रयोगों, सन्दर्भों, उनकी शब्दावलियों और अवधारणाओं से छात्रों का परिचय हो और जीवन-जगत् के विविध रूपों को वे आत्मसात कर सकें।

पाठ्यपुस्तकों द्वारा मानसिक वातावरण निर्मित होता है और उनसे संबद्ध अभ्यास-प्रश्नों द्वारा छात्र विषयवस्तु को परखने, उनसे गहराई के साथ जुड़ने और उनके विश्लेषण का कौशल अपने में विकसित करते हैं। अभ्यास प्रश्नों द्वारा उनमें किसी रचना के बिन्दुवार परख-विश्लेषण, अवबोध तथा विषय के विविध पहलुओं को देखने और आँक सकने की अंतर्दृष्टि भी विकसित होती है।

(ङ) व्याकरण और रचना :

प्रायः यह तथ्य सर्वस्वीकृत है कि बच्चों में अपनी मातृभाषा के जरिये व्याकरण और रचना की एक आधारभूत सहज और अंतःस्फूर्त्त समझ होती है, सिर्फ उसे सचेत रूप से स्पष्ट करने, दिशा और विस्तार देने तथा समुचित अभ्यास द्वारा उसकी एक जागरूक समझ बनाने की आवश्यकता होती है। इसके लिए अलग से व्याकरण और रचना के नियमों की सैद्धांतिक समझ के लिए पाठ्यपुस्तक से बाहर का प्रयत्न छोड़कर उनके विविध पाठों पर ही आधारित अभ्यासों द्वारा व्यावहारिक समझ छात्रों में विकसित की जानी चाहिए। चूँकि ऐसी व्यावहारिक समझ और अभ्यासों के पूर्व संबद्ध व्याकरण विषयों की एक संक्षिप्त और सटीक सैद्धांतिक समझ भी आवश्यक है, इसलिए पाठ्यपुस्तक में ही व्याकरण के पाठ्य-विषयों से सम्बद्ध एक स्वतंत्र पाठ भी रखा जा सकता है। इस स्वतंत्र पाठ में व्याकरण के ऐसे विषय भी आ सकेंगे जिनके लिए पाठ्य-पुस्तक में संकलित पाठों द्वारा अभ्यास संभव न हो सके। एतदर्थ, पाठों के संग्रह-संकलन में सावधानी रखी जानी चाहिए। व्याकरण और रचना का ज्ञान अभ्यास साध्य होना चाहिए और कोशिश की जानी चाहिए कि यह ज्ञान और अभ्यास अरुचिकर या उबाऊ न हो। व्याकरण सहज साध्य बन सके, इसके लिए छात्रों को आपस में अथवा स्कूल से बाहर के लोगों के साथ वार्तालाप में भी सीखे हुए या अर्जित व्याकरण ज्ञान के सहज अनुपालन हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।

3. उद्देश्य : 3

- भाषा के कौशलों—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना आदि सिखाना तथा सर्जनात्मक साहित्य से सम्बंधित आलोचनात्मक क्षमता का विकास करना—स्वतंत्र और मौलिक रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकने की क्षमता का विकास करना तथा राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग, भाषा आदि के प्रति संवेदनशील और सकारात्मक दृष्टि का विकास करना,
- साहित्य की विविध विधाओं से छात्रों का परिचय कराना,
- छात्रों में सौन्दर्यप्रियता की भावना, मौलिकता, कल्पना और सर्जनात्मकता का विकास करना,
- भाषा-साहित्य के अध्ययन द्वारा छात्रों के मनोभावों को उदात्त बनाना, उनमें सद्वृत्तियों का विकास एव चरित्र-निर्माण करना,
- राष्ट्रीय एकता, राष्ट्र-गौरव एवं संस्कृति के प्रति अनुराग का विकास करना,
- संचार-माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी की प्रकृति से अवगत कराना। नये-नये तरीके से प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना,
- विदेशी भाषाओं के साथ-साथ अहिन्दी भाषाओं की संस्कृति से परिचय कराना,
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में विभिन्न किस्म की अभिव्यक्तियों की मौखिक एवं लिखित क्षमता का विकास करना,
- सघन विश्लेषण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति एवं तर्क-क्षमता का विकास करना,
- भाषा की समावेशी और बहुभाषिक प्रकृति के प्रति ऐतिहासिक दृष्टि का विकास करना,
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भाषा की विविध क्षमताओं के विकास की गति और प्रतिभा की पहचान करना,
- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिन्दी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना, तथा
- मतभेद, विरोध और टकराव की परिस्थितियों में भाषा के तर्कपूर्ण एवं संवेदनशील व्यवहार से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का विकास करना।

परीक्षा का ढाँचा

वर्ग IX

इस पूरे पत्र को पाँच खंडों में विभक्त कर प्रत्येक खंड के सामने अंक और घंटियों की संख्या निर्धारित है :

	अंक	आवंटित घंटी
1. अपठित गद्यांश	20	35
2. रचना	15	30
3. व्याकरण	15	30
4. पाठ्य पुस्तक	40	75
5. पूरक पुस्तक	10	15

1. पहले प्रश्न में दो अपठित गद्यांश दिए जाएँगे जिनमें पहला अनिवार्यतः साहित्यिक होगा और जिसकी शब्द–संरचना 300–400 शब्दों की होगी। शीर्षक–चयन, विषयवस्तु का बोध, भाषिक संरचना पर आधारित लघु उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों की संख्या अधिकतम तीन होगी और प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

4+4+4=12

दूसरा अपठित गद्यांश वर्णनात्मक होगा जिसकी शब्द–संख्या 250–300 होगी। इस अंश से भी शीर्षक–चयन, विषयवस्तु का बोध और भाषिक संरचना पर आधारित दो लघु–उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

4+4=8

4

2. दूसरा प्रश्न रचना (क) निबंध–लेखन का होगा। निबंध–लेखन के लिए संकेत बिंदु दिये जाएँगे। निबंध की शब्द–संख्या 250–300 होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित होंगे।

10

रचना (ख) के प्रश्न संवाद अथवा पत्र–लेखन, औपचारिक अथवा अनौपचारिक, से संबंधित होंगे।

5

3. तीसरे प्रश्न में पठित व्याकरणिक प्रकरणों पर आधारित व्याकरण के तीन प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित होंगे। 5+5+5=15

व्याकरण के मुख्य बिन्दु:

लिंग, वचन, काल, विविध क्रियाएँ, वाच्य, संधि, समास, पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, लोकोक्तियाँ और मुहावरे।

किन्तु ध्यान रखा जाएगा कि इन प्रकरणों के प्रश्न यथासंभव पाठाधारित हों।

4. चौथे प्रश्न में पाठ्यपुस्तक से कुल 40 अंकों के प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों के प्रकार और प्रत्येक के लिए अंक–व्यवस्था निम्नवत् होगी :

(i) दो पद्यावतरणों में से किसी एक पर अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न 4x2 = 8
(ii) निर्धारित कविताओं में से चार प्रश्न 4x3 = 12
(iii) किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न 4x2 = 8
(iv) गद्य–पाठों पर आधारित चार बोधात्मक प्रश्न 4x3 = 12

कुल अंक : 40

5. पूरक पाठ्यपुस्तक– इससे दो प्रश्न पूछे जाएँगे, जो निम्नवत् होंगे :

(i) एक निबंधात्मक प्रश्न पूछा जाएगा जिसके लिए 4 अंक निर्धारित होंगे 4

(ii) पूरक पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो–दो अंकों के तीन लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनकी अंक–व्यवस्था इस प्रकार होगी : 2+2+2 = 6

कुल अंक : 10

पाठ्यपुस्तक– राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग IX की नयी हिन्दी पाठ्यपुस्तक / पूरक पाठ्यपुस्तक

वर्ग X

इस पूरे पत्र को पाँच खंडों में विभक्त कर प्रत्येक खंड के सामने अंक निर्धारित है :

	अंक	आवंटित घंटी
1. अपठित गद्यांश	20	35
2. रचना	15	30
3. व्याकरण	15	30
4. पाठ्य पुस्तक	40	75
5. पूरक पुस्तक	10	15

1. पहले प्रश्न में दो अपठित गद्यांश दिए जाएँगे जिनमें पहला अनिवार्यतः साहित्यिक होगा और जिसकी शब्द संरचना 300–400 शब्दों की होगी। शीर्षक–चयन, विषयवस्तु का बोध, भाषिक संरचना पर आधारित लघु उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों की संख्या अधिकतम तीन होगी और प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

4+4+4=12

दूसरा अपठित गद्यांश वर्णनात्मक होगा जिसकी शब्द–संख्या 250–300 होगी। इस अंश से भी शीर्षक–चयन, विषयवस्तु का बोध और भाषिक संरचना पर आधारित दो लघु–उत्तरीय अवबोधात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित होंगे।

5

4+4=8

2. दूसरे प्रश्न में रचना (क) निबंध–लेखन का होगा। निबंध–लेखन के लिए संकेत बिंदु दिये जाएँगे। निबंध की शब्द–संख्या (250–300) होगी। इसके लिए 10 अंक निर्धारित होंगे।

10

रचना (ख) का प्रश्न संवाद अथवा पत्र–लेखन–औपचारिक अथवा अनौपचारिक–से संबंधित होगा।

5

3. तीसरे प्रश्न में पठित व्याकरणिक प्रकरणों पर आधारित व्याकरण के तीन प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित होंगे। 5+5+5=15

व्याकरण के मुख्य बिन्दु:

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, कारक, काल, संधि, समास, लोकोक्ति, मुहावरा, शब्द–शुद्धि, वाक्य–शुद्धि, कर्त्ता की 'ने' विभक्ति का प्रयोग, उपसर्ग, प्रत्यय, उपसर्ग–प्रत्यय में अंतर, संधि–समास में अंतर।

यह खंड समेकित होगा। वर्ग IX के लिए प्रस्तावित व्याकरणिक बिन्दुओं से भी प्रश्न पूछे जाएँगे।

4. चौथे प्रश्न में पाठ्यपुस्तक से कुल 40 अंकों के प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों के प्रकार और प्रत्येक के लिए अंक–व्यवस्था निम्नवत् होगी :

(i) दो पद्यावतरणों में से किसी एक पर अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न 4x2 = 8
(ii) निर्धारित कविताओं में से चार प्रश्न 4x3 = 12
(iii) किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी चार प्रश्न 4x2 = 8
(iv) गद्य–पाठों पर आधारित चार बोधात्मक प्रश्न 4x3 = 12

कुल अंक : 40

5. पाँचवे प्रश्न में पूरक पाठ्यपुस्तक–से दो प्रश्न पूछे जाएँगे, जो निम्नवत् होंगे :

(i) एक निबंधात्मक प्रश्न पूछा जाएगा जिसके लिए 4 अंक निर्धारित होंगे 4
(ii) पूरक पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो–दो अंकों के तीन लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जाएँगे 2+2+2 = 6

कुल अंक : 10

पाठ्यपुस्तक– राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित एवं बिहार पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित वर्ग X की नयी हिन्दी पाठ्यपुस्तक / पूरक पाठ्यपुस्तक

पाठ्यक्रम

वर्ग IX

पाठ्यपुस्तक

वर्ग IX (मातृभाषा) के लिए एक पाठ्य-पुस्तक होगी जिसमें गद्य, पद्य एवं व्याकरण से क्रमशः **9, 13 एवं 1—कुल 23 की संख्या में पाठ होंगे।** इसमें प्रमुख रचनाकारों की विविध विधाओं की रचनाएँ होंगी। राष्ट्रीय स्तर के बिहार के प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं को स्थान दिया जाएगा।

प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास-कार्य होगा जिसमें भाषा की नियमबद्ध प्रकृति से भी छात्रों को परिचित कराया जाएगा। परिशिष्ट के रूप में भिन्न ज्ञानुशासनों में प्रयुक्त शब्दावलियों की सूची होगी।

इसके अतिरिक्त गद्य की एक पूरक पाठ्य-पुस्तक भी होगी।

गद्य—

6

1. राष्ट्रीयता से संबंधित निबंध
2. आत्मकथा/जीवनी
3. व्यंग्य
4. आँचलिक कहानी
5. गाँधी/विनोबा का जीवन-परिचय
6. मानवाधिकार से सम्बन्धित पाठ
7. नालंदा/विक्रमशिला जैसे ऐतिहासिक महत्त्व के विद्या-केन्द्रों का जीवंत परिचय
8. यात्रा-संस्मरण से संबंधित एक पाठ
9. एकांकी

पद्य

1. आदिकाल	—	एक कवि की एक रचना।
2. भक्तिकाल	—	दो कवियों की 6-7 रचनाएँ हो सकती है जिनमें एक सौंदर्यपरक रचना हो।
3. रीतिकाल	—	एक कवि की दो रचनाएँ, जिनमें एक ओजपरक हो।
4. भारतेन्दु युग	—	एक कविता।
5. द्विवेदी युग	—	एक कविता।
6. छायावाद	—	दो कवियों की चार रचनाएँ।
7. प्रगतिवाद	—	एक कवि की एक कविता।
8. प्रकृति-वर्णन	—	एक कवि एक रचना।
9. आधुनिक काल	—	तीन कवियों की 4 या 5 रचनाएँ हो सकती है।

व्याकरण के बिंदु :

सभी पाठ के अन्त में पाठ से सम्बंधित लिंग, वचन, काल, परसर्ग, अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक एवं प्रेरणार्थक क्रियाओं के प्रयोग, वाच्य, संधि एवं समास, पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थक, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द, मुहावरे आदि के प्रश्न एवं अभ्यास होंगे। सभी पाठों के अंत में पाठ से जुड़े अभ्यास के प्रश्न भी होंगे जिनके उत्तर रटन्त प्रथा से नहीं दिये जा सकेंगे।

काव्यशास्त्र : शब्द-शक्ति : अभिधा और लक्षणा; अलंकार : शब्दालंकार—अनुप्रास, यमक, श्लेष; मात्रिक छंद, यथा—दोहा; सोरठा; चौपाई; रोला और छप्पय।

पूरक-पाठ्य-पुस्तक :

बिहार के सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र के तीन महापुरुषों के बारे में चरितमूलक जीवनी, बिहार के तीन ऐतिहासिक महत्त्व के आख्यानों अथवा दो प्रसिद्ध राजाओं या शासकों के व्यक्तित्व एवं कार्यों के बारे में प्रामाणिक आरेखन करता हुए आलेख, दो धार्मिक-सामाजिक क्षेत्र के एक संत या महापुरुष की जीवनी।

वर्ग X

पाठ्य-पुस्तक :

दशम वर्ग में बिहार एवं राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख रचनाकारों की विविध विधाओं से सम्बन्धित एक पाठ्य-पुस्तक होगी जिसमें पद्य के 14, गद्य के 9 एवं व्याकरण का 1—कुल 24 पाठ होंगे।

पाठ के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न दिये जायेंगे जिससे पाठगत संदर्भों वाले भाषिक-प्रयोगों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए भाषा की नियमबद्ध प्रकृति से परिचित कराया जायेगा। पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट के रूप में भिन्न ज्ञानानुशासनों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावलियों की सूची होगी।

गद्य

1. एकांकी।
2. वैचारिक निबन्ध।
3. व्यंग्य।
4. राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े महापुरुषों की आत्मकथा या किसी रचना के अंश।
5. डायरी।
6. मानवाधिकार से सम्बंधित पाठ।
7. मर्मस्पर्शी कहानी।
8. ललित निबंध।
9. साहित्यकारों के साक्षात्कार विषयक एक पाठ।

पद्य

1. भक्तिकाल	—	दो कवियों की चार रचनाएँ
2. रीतिकाल	—	दो कवियों की दो रचनाएँ
3. छायावाद	—	दो कवियों की चार रचनाएँ
4. तार-सप्तक	—	एक कवि की एक रचना
5. प्रगतिवाद	—	एक कवि की एक या दो रचनाएँ।
6. नयी कविता	—	एक कविता।
7. समकालीन कविता	—	दो कवियों की एक-एक रचनाएँ।
8. साठोत्तरी कविता	—	दो कवियों की दो कविताएँ।

व्याकरण के बिंदु :

- भाषा और व्याकरण : अब तक सीखे व्याकरण के पुनरावृत्तिमूलक अभ्यास
- सन्धि—प्रकार सहित
- समास—रचना और प्रकार सहित
- संक्षेपण : अनेक तरह के गद्यावतरणों के संक्षेपण से संबद्ध अभ्यास
- पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्द : उदाहृत वाक्यों में व्यवहृत शब्दों से ऐसे शब्दों की पहचान
- मुहावरे और लोकोक्तियाँ : वाक्य-प्रयोग
- पदबन्ध, वाच्य एवं उनके भेद, वाक्य-प्रकार एवं संशोधन पर प्रश्न, जिनके उत्तर अपनी संवेदना एवं अनुभव से दिए जा सकेंगे

काव्यशास्त्र : शब्द-शक्ति : व्यंजना; अलंकार : अर्थालंकार—वक्रोक्ति उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति विरोधाभास, वर्णिक छंद, यथा—इंद्रवज्रा; भुजंगप्रयात; मंदाक्रांता; मत्तगयंद सवैया और कवित्त (मदनमनोहर दण्डक) काव्यगुण।

पूरक-पाठ्य-पुस्तक :

गद्य की एक पूरक-पाठ्य पुस्तक होगी जिसमें हिन्दी से इतर भारतीय भाषाओं के साहित्य की चुनिंदा आठ कहानियाँ होंगी।

सतत व्यापक मूल्यांकन

वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना

वार्तालाप, वाद-विवाद, भाषण, कविता-पाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को जानना

बोलना

- भाषण, वाद-विवाद
- गति, लय, आरोह-अवरोह सहित सस्वर कविता-वाचन
- वार्तालाप और उसकी औपचारिकताएँ
- कार्यक्रम-प्रस्तुति
- कथा—कहानी अथवा घटना सुनाना
- परिचय देना, परिचय प्राप्त करना
- भावानुकूल संवाद-वाचन

वार्तालाप की दक्षताएँ

टिप्पणी : वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय होगा।

श्रवण (सुनना) का मूल्यांकन

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेंगे। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक सकता है। अनुच्छेद लगभग 200 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक को सुनते-सुनते परीक्षार्थी अलग कागज पर दिए

हुए श्रवण बोधन के अभ्यासों को हल कर सकेंगे। अभ्यास—रिक्त शब्द-पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सत्य/असत्य का चुनाव आदि ढंगों के हो सकते है। आधे-आधे अंक के 10 प्रश्न होंगे।

वाचन (बोलना) का परीक्षण

- चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णन (इस वर्णन की भाषा अनिवार्यतः वर्णनात्मक होगी)
- किसी चित्र विशेष को देखकर वर्णनात्मक प्रभावाभिव्यक्ति
- किसी विषय पर स्मरण के आधार पर बोलना
- कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना

टिप्पणी

1. परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को तैयारी के लिए कुछ समय दिया जाए।
2. विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
3. निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव संसार के हों, जैसे : कोई चुटकुला या हास्य-प्रसंग सुनाना, हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे गए सिनेमा की कहानी का सारांश सुनाना
4. जब परीक्षार्थी बोलना प्रारंभ कर दे तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

कौशलों के स्तर भेद का निर्धारण

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
• विद्यार्थी में परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता तो है, किन्तु आशय को संबद्ध रूप में नहीं समझ पाता।	• विद्या में मात्र शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता तो है, किंतु वह उन्हें सुसम्बद्ध रूप में बोल नहीं पाता।
• लघु-लघु संबद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	• परिचित संदर्भों में मात्र लघु-लघु संबद्ध कथनों को सीमित शुद्धता के साथ प्रयोग करता है।
• परिचित या अपरिचित—दोनों प्रकार के संदर्भों में कथित सूचना की स्पष्टतः समझने की योग्यता तो है किंतु भाषागत अशुद्धियाँ भी है, जो भावाभिव्यक्ति में अवरोध उपस्थित करती हैं।	• लघु की अपेक्षा दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता लक्षित होती है किंतु संप्रेषण या अभिव्यक्ति में अवरोधक कुछ अशुद्धियाँ भी पायी जाती हैं।
• दीर्घ कथनों की शृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझता है और निष्कर्ष निकाल सकता है।	• अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित का धारा-प्रवाह प्रस्तुत कर सकता है। कुछ अशुद्धियों के बावजूद सम्प्रेषण निर्बाध रहता है।
• उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता के साथ जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं की समझ।	• नगण्य अशुद्धियों से युक्त प्रसंग और श्रोता दोनों के अनुरूप,भाषण-शैली का प्रमाण देता है।

4. अपेक्षित अधिगम

इन उच्च कक्षाओं तक पहुँचकर छात्र ज्ञान, समझ, सूचनाएँ और कौशल अथवा दक्षता के एक ऐसे सघन शिक्षण के दौर से गुजरेंगे और उनमें भाषा-साहित्य के माध्यम से समय, समाज और यथार्थ की एक ऐसी समझ विकसित होगी कि यह संभावना की जा सकेगी कि बच्चे मानसिक और बौद्धिक रूप से पर्याप्त वयस्क, सजग और जिम्मेदार हो सकेंगे। उनमें पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को लेकर एक जवाबदेही और गंभीरता का भाव आएगा

तथा राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की चेतना जगेगी। वे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, सीखना—इन तमाम स्तरों पर सजग होकर व्यक्ति के रूप में समाज की एक क्रियाशील एवं विवेकपूर्ण इकाई बन सकेंगे। इस चरण में बच्चों में सामाजिक, धार्मिक, लैंगिक और भाषायी सहअस्तित्व और सदभाव की एक सक्रिय और प्रभावी समझ जगेगी जिससे समाज एवं सभ्यता-संस्कृति की सकारात्मक शक्तियाँ संगठित हो सकेंगी। इस रूप में इन वर्गों.के बाद बच्चे सच्चे अर्थों में राष्ट्र के एक उज्ज्वल भविष्य के आवश्यक आधार बन सकेंगे। उनमें नकारात्मक शक्तियों का रचनात्मक प्रतिरोध और प्रतिकार कर सकने की क्षमता भी जगेगी। वे सघन विश्लेषण, तर्कक्षमता एवं स्वतंत्र अभिव्यक्ति में समर्थ हो सकेंगे। इन वर्गों के पाठ्यक्रमों की संकल्पना ऐसी है कि उसके द्वारा छात्रों में साहित्य की विविध विधाओं की तात्त्विक और संरचनात्मक समझ जग सकेगी तथा भाषा और साहित्य की परंपराओं और प्रवृत्तियों की उनकी ऐतिहासिक जानकारी भी बढ़ेगी। व्याकरण और रचना के अपेक्षाकृत गहरे और विस्तृत ज्ञान तथा सम्बद्ध अभ्यासों द्वारा भाषा-साहित्य पर उनका अधिकार भी अधिक बढ़ेगा। इस चरण में कविताओं के वाचन, प्रदत्त विषय पर भाषण और वक्तृता, लेखन के विविध रूपों के अभ्यास द्वारा सामर्थ्य की अभिवृद्धि, साहित्य के अतिरिक्त सह-शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा परिचर्चा, संगोष्ठी आदि के साथ विविध कलाओं और रचनात्मक कार्यों से संबंधित अभिरुचियाँ, कौशल आदि भी बढ़ेंगे। वे नैतिकता, सौंदर्यबोध, समन्वित विवेक और कर्म-कौशल के विश्वसनीय परिचायक और स्रोत बन सकेंगे। पाठों के संकलन में प्रकृति, जीवन-जगत् और सभ्यता की समसामयिक वास्तविकताओं के वैविध्यपूर्ण प्रतिनिधित्व का ध्यान इसलिए रखा गया है कि छात्र इनसे न केवल परिचित हो, बल्कि इन सबसे खुद को जुड़ा हुआ भी देखें, समझें और अनुभव करें। इन सब के प्रति जिम्मेदारी एवं जवाबदेही के भाव भी उनमें आएँ।

5. पाठ्यसामग्री चयन हेतु आवश्यक सुझाव

प्रस्तावित पाठ्यक्रम के तीनों चरणों की पाठ्यसामग्री के लिये मुख्य रूप से तीन स्रोत होने चाहिएँ। पहला स्रोत अन्तर्भारतीय हिन्दी और अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य का सुप्रतिष्ठित लिखित कोश, दूसरा स्रोत हिन्दी की सामान्य रूप से विभाषाओं (बोलियों), विशेष रूप से बिहार की बोलियों के लिखित साहित्य की रूपान्तरित अथवा मौलिक रचनाएँ तथा तीसरा स्रोत उन रचनाओं का होगा जो आवश्यकतानुसार लेखकों द्वारा लिखवाई जाएँगी।

हिन्दी चूँकि राष्ट्रभाषा है, इसलिए हिन्दी भाषा-साहित्य के पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप ही प्राप्त होना चाहिये। इसलिए, सत्तर प्रतिशत रचनाएँ हिन्दी की, पन्द्रह प्रतिशत रचनाएँ अन्तर्भारतीय साहित्य की, दस प्रतिशत रचनाएँ लोकभाषाओं अथवा बोलियों की और पाँच प्रतिशत रचनाएँ अन्तरराष्ट्रीय साहित्य से होनी चाहिएँ। निश्चय ही, हिन्दीतर स्रोतों से आने वाली रचनाएँ हिन्दी में भाषान्तरित होंगी। बिहार के परिप्रेक्ष्य में इतनी शिथिलता बरती जा सकती है कि यहाँ की बोलियों का लिखित साहित्य देवनागरी लिपि में भी लिया जा सकता है। हिन्दी की रचनाओं के चयन में विभिन्न कालों एवं विधाओं के बिहारी रचनाकारों का विशेष तौर पर ध्यान रखा जाना चाहिए; ताकि बिहार की भावी पीढ़ी अपनी समृद्ध विरासत से परिचित हो सके; साथ ही, हिन्दी की रचनाओं के चयन में हिन्दी की सभी विधाओं—यथा, कविता, कहानी, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, जीवनी, रिर्पोताज, यात्रा-वृतांत आदि का समुचित प्रतिनिधित्व मिल सके।

हिन्दी का इतिहास हजारों वर्षों में फैला हुआ है। उस में विविध भाषा-रूप और युग एवं प्रवृत्तियाँ है। अतः, हिन्दी रचनाओं के चयन में इसका ध्यान रखा जाना चाहिए कि आरम्भिक अपभ्रंशमूलक रूप को छोड़कर शेष सभी भाषा-रूपों, युगों और प्रवृत्तियों के साथ-साथ विविध सामाजिक स्तरों से आनेवाले लेखकों का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में समावेशी प्रतिनिधित्व हो सके। हिन्दी भाषी समाज के ऐतिहासिक लोक-जागरण, उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी के नवजागरण, स्वाधीनता-आन्दोलन, जनतंत्र की स्थापना, किसान-मजदूरों, अल्पसंख्यकों, दलितों, महिलाओं के उत्थान से संबंधित सामाजिक आन्दोलनों और अभियानों की चेतना का संवाहक साहित्य पाठ्यक्रम में समाविष्ट हो सके, इसका विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

आज के नये दौर में भारतीय लोकतंत्र सामाजिक परिवर्तन, संक्रमण और विकास के एक नये चरण में प्रवेश कर चुका है, जहाँ जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, लिंग आदि से संबंधित भेद-भावों के लिए कोई जगह नहीं बची है। ज्ञान-विज्ञान, तकनीक, सूचना और संचार के साथ ही व्यापार और वाणिज्य का बहुत विकास हुआ है। आधुनिकता के इन तमाम लक्षणों को निरूपित करनेवाला तथा इस विकास को वैज्ञानिक मानववादी दिशा में आगे बढ़ा ले चलने वाला साहित्य पाठ्यक्रम में समाहित किया जाना चाहिए।

पुरानी रचनाओं के साथ-साथ नई लिखी जानेवाली रचनाओं के संकलन और चयन में इसका विशेष ध्यान रखाा जाना चाहिए कि उनमें भाषा और साहित्य से संबंधित किसी भी तरह की संकीर्णता और कट्टरता को प्रश्रय न मिले और पाठ्यसामग्री, छात्रों को देश-दशा और युग-समय से काटनेवाली और निरी साहित्यिक न हो, बल्कि वह भाषा और साहित्य के बारे में व्यापक अवधारणाएँ लेकर चले। समाज, राजनीति, पर्यावरण, दर्शन, संस्कृति, विज्ञान, तकनीक आदि जीवन जगत के विविध रूपों का उसमें समावेश किया जाना चाहिए ताकि ऐसा पाठ्यक्रम पढ़कर जो विद्यार्थी निकले, उसमें अपने अतीत (इतिहास), समय एवं समाज की साफ समझ हो। प्रस्तावित पाठ्यक्रम के निर्माण के पीछे की यही संकल्पना है।

https://www.freshersnow.com/category/govt-boards/board-syllabus/